Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 2
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

'गवाह गैरहाजिर' का मूल कथ्य

पवन कुमार ठाकुर
शोधार्थी, हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
डॉ. निवेदिता कुमारी
शोध-निर्देशिका व असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, जे.एम.डी.पी.एल महिला कॉलेज, मधुबनी

Article Info

Article History
Received : 03 May 2024
Published : 15 May 2024
Publication Issue :
May-June-2024
Volume 7, Issue 3
Page Number : 29-34

सारांश : चंद्रकिशोर जायसवाल आम लोक के कथाकार हैं और वे आम जन से जुड़ी समस्याओं को अपने लेखन के माध्यम से दुनिया के सामने रखते हैं। 'गवाह गैरहाजिर' उपन्यास में पारिवारिक संबंधों को रेखांकित किया है। जिसमें वृद्ध व्यक्ति के मानसिक स्थिति को दिखाते हुए पारिवारिक संबंधों को दिखाने का प्रयोस किया है। जो इस उपन्यास का नायक किशुन साह के बेटा रामशरण और उनकी पत्नी के व्यवहार से परेशान होकर हमेशा के लिए वरुणेश्वर स्थान जाने का निर्णय लेते हैं। लेकिन बाल-बच्चे, घर-द्वारा, दोस्त-महिम, संगे-संबधी आदि के मोह-माया के कारण रास्ते से ही वापस लौट आते हैं।

बीज शब्द : गवाह, गैरहाजिर, कथ्य, शिष्टाचार, परिवर्तन, अँचल, गाँव, स्थिति, आकृष्ट, स्वच्छ, परिवार आदि।

'गवाह गैरहाजिर' 1982 ई. में प्रकाशित चंद्रकिशोर जायसवाल का प्रथम और प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास पर 'रुई का बोझ' नाम से फिल्म बनाई गयी है और यह बहुत चर्चित रही है। इस उपन्यास में कथा के अनुकूल ग्रामीण पत्र भी देखने को मिलता है। जो प्रमुख पात्र निम्निलिखित हैं-किशुन साह, रामलखन, अयोधी, रामशरण, तिनतंगावाली, माधो भगत, कनकिर मंडल, डोमी गुप्ता, पिरित चौधरी, ठाढ़ेश्वरी बाबा, फनिलाला जी, आदि। यह उपन्यास बिहार प्रान्त के पूर्वी क्षेत्रीय के आँचलिक जीवन पर आधारित है। इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र किशुन साह हैं और इन्हीं के जीवन पर आधारित है, जो बेटा और पतहुओं के व्यवहार के कारण घर से निकल जाते हैं और फिर मोह माया के कारण आधे रास्ते से वापस आ जाते हैं।

आधुनिक दुनिया में बहुत सारे परिवर्तन हुए और बहुत सारे बदलाव भी हुए। बहुत सारे चीजों का अविष्कार हुआ लेकिन इस परिवर्तन के साथ-साथ बहुत कुछ नकुसान भी हुआ। आज के दौर में मनुष्यता धीरे-धीरे खत्म होते जा रहा है। आदमी, आदमी से दूर होता जा रहा है। शिष्टाचार खत्म होती जा रही है। आज से पहले का परिवार में जो सहमति रहता था वो सहमति आज नहीं देखने को मिलता है और ज्यो-ज्यो समय बीतता जा रहा है स्थिति और भी खराब होती जा रही है। पहले के परिवार में पिता-पुत्र का संबंध, भाई-भाई का संबंध, दियादनी-दियादनी का संबंध और तो और सास-बहू आदि के रिश्तों में शिष्टाचार देखने को मिलता था। जब सास सोने जाती तो बहु पहले सास की सेवा करके सोने के लिए जाती थी।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

किंतु आज के परिवारिक रिस्ते, धीरे–धीरे छिन्न–भिन्न होते जा रहे हैं। आज के दौर में सेवा को छोड़िए, बच्चा भी एक ग्लास पानी नहीं देना चाहता। हम देखते हैं परिवार में घर फुटाने का काम लगभग औरतें करती हैं। उसे अपने बच्चों और पति के अलावे और कोई भी उसे पसंद नहीं आता। जायसवाल जी ने अपने उपन्यास 'गवाह गैरहाजिर' में इसका चित्रण बहुत ही बारीकी से किया है। प्रत्येक परिवार में एक गार्जियन होता है; वे अपने अनुसार सभी सदस्यों को मिला–जुला कर रखते हैं। जब परिवार में सहमति नहीं रह जाती और तूतू मैं–मैं हद से ज्यादा हो जाता है तो घर के मुखिया एक ठोस कदम उठाकर उस घाव को जड़ से मिटने का प्रयास करते हैं। जायसवाल जी कहते हैं "अंत में मर्दों ने मिल–जुलकर इस राक्षस–राज्य को समाप्त कर डालने का निर्णय ले लिया। सास की हौसुली को लेकर पतोहूओं के बीच जो चख–चख शुरू हुई थी, जिसके लिए हर पतोहुओं ने सास के कुछ क्षणों के लिए जिंदा होकर इस रहस्य पर से परदा उठा देने की विनती की थी, उसे चख–चख को किसुन साह ने अपनी सीख और चिल्लाहट के बीच दफना देने में सफलता प्राप्त कर ली"[1]

किशुन साह के तीन बेटे हैं। बड़ा बेटा रामलगन, मझिला बेटा अयोधी और छोटा बेटा रामशरण। तीनों बेटों की पत्नी और बाल–बच्चे। किशुन साह का एक भरा–पूरा परिवार है। उन्होंने अपने तीनों बेटों में जमीन जथा, पैसा–कौड़ी आदि बाँट दिया। "बंटवारे के आधार पर रामलगन और अजोधी अपनी पुरानी डीह और मकान छोड़कर अलग हो गये। इसके बदले में उन्हें हाट के पास दो किता जमीन मिल गयी थी जो दुकानदारी के ख्याल से अधिक उपयोगी थी, खेत के टुकड़ों को भी उनके बीच बाँट दिया गया।"[2] गाँव के बाहर के खेत तीनों में बराबर–बराबर बैंक में पैसा तीनों भाइयों में बराबर–बराबर, और दुकान छोटे बेटा रामशरण के हिस्से में दिया। गाँव से लगे छह बिघे का खेत अपने पास रख लिया। किशुन साह किसके पास रहेगा यह तीनों भाइयों पर छोड़ दिया। बड़ा बेटा अपने पास रखने से इंकार कर दिया। मझिला बेटा के पाँच–पाँच बेटी होने के कारण वो भी इंकार कर दिया। दोनों भाइयों (रामलगन और अयोधी) पिता को छोटे भाई रामशरण को हिस्से में रहने के लिए कहा। यही कहकर की रामशरण अभी छोटा है और उसे आपके सहारे की जरुरत है। जायसवाल जी लिखते हैं "बाप को भी दौलत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानकर जब उसके बँटवारे का सवाल उठाया गया, तो रामलगन ने चुप्पी साध ली। बाप के अगर तीन टुकड़े हो जाते तो मजबूरी में उसे एक टुकड़ा उठा लेना पड़ता पर समूचे बाप को अपने हिस्से में डाल लेना उसे नागवार गुजरा। बाप को अभी फुंसी भी नहीं था, पर जिसके शीघ्र ही भगंदर बन जाने की सारी समस्याएँ प्रगट हो रही थीं, उसके किसी काम का नहीं था, क्योंकि उसके अपने बेटे तेजी से जवान होते चले जा रहे थे।, खतरा तो और बढ़ जाता था कि बाप उसके घर में अपने दूसरे बेटों की तरफ से जासूसी करना शुरू कर देगा, जबकि जरूरत इस बात की थी कि उसकी जमामारी और पोगली का राज किसी पर भी खुलने ना पाये।.. इसी से मिलती–जुलती स्थिति अजोधी की भी थी। बाप के हाथ–पैर तो वह अपने हिस्से में रख सकता था, पर उनके मुँह–पेट को भरने की क्षमता उसमें अब नहीं बची थी। जोड़– घटाव करने के बाद भी समूचा बाप बिलकुल घाटे का सौदा था। जान–बूझकर आग में कौन हाथ डालता है! उसकी छाती में तो पहले से ही पाँच–पाँच काँटे गड़े हुए थे, छठे काँटे के लिए अब और जगह नहीं थी। अंत में इस घोषणा के साथ की छोटा लड़का रामशरण अभी छोटा है, नादान है, अपना भला–बुरा सोचने में असमर्थ है, और दरअसल उसे ही एक सहारे की जरूरत है, बाप को उसके साथ साटदिया गया।"[3] जो पिता पाल–पोसकर बड़ा किया है। एक भरा–पूरा परिवार बसा दिया आज उसी परिवार में उसे अवहेलना किया जा रहा है। उसे दरकिनार किया जा रहा है।

बटवारे की खबर सुनते ही किशुन साह के दोस्त मंडली कहने लगे "जब गाँव के ढेर सारे बूढ़े– बुजुर्गों और परिचितों ने, जले मन से ही सही, किशुन साह को बार–बार इस सफलता और सौभाग्य पर दाद देनी शुरू की कि उसने जीते जी बेटों के बीच बाँट–बखरा कर दिया, कि बिना किसी सिरफुरौवल, मुँहचुथौवल, लाठालाठी और गुहगिंजन, के सबको अलग–अलग बिठा दिया, कि अब बुढ़ापे में उन्हें मौज ही मौज है। तो आंतरिक कष्ट के बावजूद किशुन साह को खुश होने

के सिवा और कोई चारा नहीं था।"[4] लेकिन किशुन साह के अन्दर क्या बीत रहा है इसे कौन जानता है। आज सम्पति के लिए बेटा बाप पर हाथ उठा देता है। सम्पति के लिए भाई-भाई में दुश्मनी हो जाती है। बेटा बाप का क़त्ल करने को तैयार हो जाता है। गाँव में ऐसे-ऐसे बहुत सारी घटनाएँ होती रहती है जैसे - 'डोमी गुप्ता के मंझले बेटे ने बटबारे के पंचायत में लठ कस दिया', ऐसी कई समस्या देखने को मिलाती है। इन समस्याओं को जायसवाल जी ने अपने उपन्यास 'गवाह गैरहाजिर' में बहुत ही गहराई से प्रस्तुत किया है।

किशुन साह के तीस वर्ष पुराने दोस्त माधो भगत हैं। उन्हें वे अपना दु:ख- सुख सुनाया करते थे। जब किशुन साह के जीवन में किसी बात से या कोई और कारण से मन पर चोट पहुंचती है तो उसे माधो भगत से साझा करते। इस बटबारे की खबर सुनकर माधो भगत जी किशुन साह को समझाते हैं "आदमी का बुढ़ापा तब चालू हो जाता है जब वह बुढ़ापे के विरुद्ध जाने-अनजाने लड़ाई शुरू कर देता है। माधो भगत ने किशुन साह को यह बतलाया कि अब उन्हें रामायण का पाठ शुरू कर देना चाहिए, एक गाय खरीदकर उसकी सेवा में रत हो जाना चाहिए, बच्चों को सुनाने के लिए कहानियाँ इकट्ठी कर लेनी चाहिए, घर के गुम हो गये माल-मवेशी को ढूंढ निकालने के लिए तैयार हो जाना चाहिए, हाट-बाजार से सस्ती दरों पर साग-सब्जी खरीदने में माहिर हो जाना चाहिए और पतोहुओं को तुरंत मालकिन का दरजा दे डालना चाहिए। इन्हीं के ज़रिये, उनकी राय में, बुढ़ापे के विरुद्ध लड़ाई लड़ी जाती है।"[5] कहा जाता है कि लोगों को दोस्त से बचकर रहना चाहिए लेकिन समाज में माधो भगत जैसे भी दोस्त होते हैं जो हर एक मुसीवत में साथ देते हैं।

जब सब कुछ बँटबरा हो गया तो तीनों भाईयों अपनी-अपनी पत्नी से राय मशवरा लेने गये। बड़ी बहू ने कहा अच्छा किया। आपने आगे चलकर उनकी देखभाल कौन करता अभी ठीक है लेकिन बाद में .... 'एक दिन की बुराई और जिंदगी भर का आराम'। मंझली बहू ने भी नकार दिया। यह कहकर कि मुझे पाँच-पाँच बेटी है मैं कहाँ से बाबू जी को रख पाउँगी। छोटा बेटा रामशरण भी अपनी पत्नी से पूछा पिताजी मेरे साथ रहेंगे। तो पत्नी बोली ठीक है। क्या मुझे कम लोग सराहना करेंगे की पिता को अपने पास रखा। आप ने बड़ा काम किया है। मैं बदनाम होने से बच गयी। अब रामशरण बाबू जी को किन-किन चीजों की आवश्यकता है पत्नी को सुनाया। रामशरण बोला बाबू के एक पलंग, नया धोती-कुर्ता, नया मच्छरदानी, नया कम्बल, नया गदेला आदि की जरूरत है। लेकिन पत्नी इन बातों से सहमत नहीं हुई, उसने जो है उसी में काम चलाने का सलाह दी और रामशरण को पत्नी की बात स्वीकार करना पड़ा। आगे रामशरण बाबू जी के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए रोज एक सेर दूध देने का निर्णय लिया, लेकिन पत्नी ने पाव भर से काम चलाने की सलाह दी। अंत में रामशरण एक गाय खरीदने का निर्णय लिया, वहीं पत्नी ने एक बकरी खरीदने की सलाह दी।

हमारे समाज में घर के अंदर लगभग पत्नी के अनुसार ही कोई निर्णय लिया जाता है उन्हीं के अनुसार ही घर चलता है यदि उनकी इक्छा के अनुसार नहीं हुआ तो घर की आंतरिक स्थिति ठीक नहीं रहती है। यदि ऐसा नहीं है तो किशुन साह को भी सोने के लिए एक पलंग नया धोती-कुर्ता, मच्छरदानी, रजाई, कम्बल, सेर भर दूध आदि मिल पाता। जायसवाल जी ग्रामीण जीवन का यथार्थ को दुनिया के समाने रखते हैं।

रामशरण ने पत्नी के आदेश पर एक बकरी खरीद ली। वह बकरी घर से बाहर कलम-गाछी में चर रही थी। दोपहर में बकरी घर नहीं आई। पतोहू बकरी लाने पहले अपने बेटे से बोली। जब बेटा जाने से इंकार कर देता है तो किशुन साह को बकरी लाने के लिए बोलती है और साह जी को जाने पर मजबूर कर देती है। बोलती है 'जब बकरी खो ही जायगी, तो फिर रात...' किशुन साह बकरी लाने जाते हैं तो किसी दूसरी बकरी को लेकर आ जाते हैं- क्योंकि वे अपनी बकरी को पहचानते ही नहीं थे। जब किशुन साह घर पर बकरी लेकर लाए तो बहू के मुखारविंद से ताना सुने और बकरी को बहू ने वहाँ से भगा दिया। बाद में अपनी बकरी चरकर अपने आप आ जाती है।

हमारे समाज में पिता जब स्वस्थ रहता है, अपना काम ईमानदारी से करते रहते हैं। वे किसी पर आश्रित नहीं रहते हैं, वे अपने परिवार का सारा भार उठाए रहते हैं, उस समय घर के समस्त परिवार उसे अपने पास रखना चाहता है। जब वे काम करने की अवस्था में नहीं रह जाते या तो बूढे अवस्था के कारण या किसी और परिस्थितियों के कारण ? तो फिर देखिए परिवार में इक्का-दूक्का छोर कर लगभग सभी व्यक्ति को उस संघर्षशील पिता की प्रीत देखने का नजरिया बदल जाता है। धीरे-धीरे परिवार के सभी सदस्य उनसे दूर होने लगते हैं। पास में कोई नहीं रहना चाहते। खाने-पीने की बात तो छोड़िय समय से पानी भी नहीं मिल पाता है। अंत में उनके प्रति ऐसी घृणा करने लगती है कि उस दिशा में मुड़ कर भी देखना नहीं चहता। वह चाहता है कि मुझसे दूर कब हो जाय। उस समय आदमी अपनी मानवता खो बैठते हैं। किशुन साह भी अब एक अवस्था पर पहुच चुके हैं और बुढ़ापे के संधर्ष से जूझ रहे हैं। जायसवाल जी लिखते हैं -"अब बेटे-पतोहू से बहुत उम्मीद मत रखिये, साहजी,...एक बात बता दूँ बाप रुई का बोझ होता है, भारी नहीं लगता शुरू-शुरू में। पर ढलती उम्र का हर क्षण उसे भिगोता चलता है और बुढा बाप पानी खाये गट्ठर की तरह हो जाता है जिसे हर बेटा कंधे से उतार फेंकना चाहता है"[6]

'गवाह गैरहाजिर' उपन्यास में जायसवाल जी आँचलिक गाँव के हालात दिखाने का प्रयास करते हैं। वहाँ के लोग कैसे जीवन यापन करते हैं। वहाँ अभी भी कितनी असुविधाएं है। फिर भी इस गाँव में सड़क वगैरा नहीं बनता, सरकारी कार्य नहीं होता वैसे ही एक आँचलिक गाँव 'कठौतिया' है। जहाँ कोई विकास नहीं होता है लेकिन वहां कुछ दुकाने बढ़ने लगी है तो उस गाँव के लोगों धीरे-धीरे कठौतिया बाजार नाम से जानने लगा है। लेकिन आज भी इस गाँव में बहुत सारी समस्याएँ देखने को मिलती हैं। यहाँ सड़क, गलियाँ, खेत, बाग़-बगीचे, आदमी के पहनावा-ओढावा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। वहाँ जाने माने वही व्यक्ति कहलाते हैं जिसके पास जमीन हो, पक्का कुआँ हो, बागबगिचा आदि। उस गाँव में बिन्देश्वरी मंडल का बगीचा है, सागरी भगत का खेत, पवित्तर राय का भंगावारी आदि।

गाँव से सटे पूरब दिशा में श्री सगरी भगत की बारह-चौदह बीघे जमीन है। गाँव के लोगों दिशा-मैदान के लिए उस खेत में जाते हैं। ये बात जायसवाल जी 1982 में कहते हैं, लेकिन आँचलिक गाँव की स्थिति अभी भी वही है। लोगों को दिशा-मैदान के लिए बाहर ही जाना पड़ता है और जिसकी जमीन रहती है उनसे गाली भी सुननी पड़ती है। लेकिन करे तो करे क्या सुनते हैं। वैसे ही उस गाँव में श्री सगरी भगत जी ने दिशा मैदान बंद करने का बहुत प्रयास किया लेकिन ऐसा संभव नहीं हो पाया। ऐसे मानव हीन व्यक्ति अभी भी है। जिसके आगे गाँव का इज्जत से बढ़कर जमीन जथा है। उसी खेत से सटा हुआ एक कुआँ है। सुबह-सुबह गाँव के लोग उस कुआँ का फायदा उठाते हैं। सुबह में उस कुआँ के पास जाकर बूढ़े-बुजुर्गों सब मुँह हाथ धोते हैं और बगीचे में बैठकर गपशप करते हैं। और अपने-अपने दिल की बात दूसरे को सुनाते और दूसरे की बात स्वयं ग्रहण करके अपने-अपने मन को बातचीत के माध्यम से हल्का करके और फिर अपना दिनचर्या में लग हो जाते थे। ऐसी बातचीत अभी भी गाँव में बूढ़े-बुजुर्गों के साथ होती है। बालकृष्ण भट्ट अपने निबंध 'बातचीत' में लिखते हैं कि "जहाँ आदमी की अपनी जिन्दगी मजेदार बनाने के लिए खाने-पीने, चलने-फिरने आदि की जरुरत है, वहाँ बातचीत की भी उसको अत्यंत आवश्यकता है। जो कुछ मवाद या धुँआ जमा रहता है, व बातचीत के जरिए भाप बनकर बहार निकल पड़ता है। चित्त हल्का और स्वच्छ हो परम आनंद में मग्न हो जाता है।"

एक दिन कोकन, किशुन साह के घर पर आए थे। जब दोनों व्यक्ति अपनी भावनाओं को आदान-प्रदान कर रहे थे तो उसी समय रामशरण अपने बेटे के साथ भोज खाने जा रहे थे। जाते समय किशुन साह को भी जाने के लिए बोले। साह जी ने तो पहले जाने से इंकार किया फिर पूछा किसके यहाँ भोज है? पोता ने कहा माधो भगत मर गए हैं। यह स्वर सुनते ही "किशुन साह की दृष्टि असीम शून्य में बिखर गयी... बुढा हृदय जोरों से धरकने लगा था...पर एक बूढ़े काँपते हुए

देखता रहा हक्का-बक्का किशुन साह ने उस दिन ऐसा ही कहा। उनका अंतिम गवाह सदा के लिए गैरहाजिर हो गया था...आँसू जब थामेंगा, तो आँखों की पुतलियाँ स्थिर हो जायेंगी, होंठ बंद हो जायेंगे, शरीर निष्प्राण-सा हो जायेगा। किशुन साह माधो भगत के सुझाव पर पहली बार गैर फरमा रहे होंगे- एक सप्ताह तक मौन घारण कर लीजिये, साहजी। पर यह सप्ताह केवल सात दिनों का होगा?"[7]

बेटा माता-पिता का कर्ज कभी नहीं चुका सकता है। बेटा इस बात से अज्ञात हो जाता है। इस समाज में बहुत सारे ऐसे माता-पिता हैं जो बेटा के पास धन दौलत रहते हुए भी माता-पिता अपना संघर्ष करते हुए अपना जीवन यापन करते हैं। व्यक्ति किस लिए धन-दौलत इक्कठा करता हैं; कि मेरा बेटा को कोई तकलीफ न हो। मेरा बेटा किसी के यहाँ हाथ न फैलाए। जो संघर्ष मैं कर रहा हूँ, वो मेरा बेटा को नहीं करना पड़े। जिस दुनिया में मैं जी रहा हूँ, वह दुनिया बेटा को नहीं देखना पड़े। लेकिन कुछ अपवाद को छोड़कर लगभग सभी बेटों को माता-पिता भारी पड़ने लगते हैं।

समाज में यदि किसी के यहाँ लड़ाई झगड़ा हो जाती है तो गाँव में अड़ोसी-पड़ोसी मौका का फायदा उठाने लगते हैं। मजा लेने लगते है। अक्सर पिता पुत्र में वाद-विवाद, कहासुनी, हथापाई होता ही रहता है। उसका चित्रण भी मिलाता है। जब किशुन साह का मन घर से टूटा गया तो उसने जहाँ-तहा गन्दी फैलाने आगे उस पर नाराज होकर रामशरण और किशुन साह में बहुत लड़ाई झंझट हुआ। किशुन साह का मानना था कि मैं अपने कर्मों पर थूक रहा हूं।

जब किशुन साह अपने परिवार के व्यवहार से परेशान होकर बाकी जिन्दगी वरुणेश्वर स्थान में बिताने का निर्णय लेते हैं। उसके बाद बूढ़े, बुजुर्गों को घर में कितना जरूरत है, इसका अहसास परिवार के सदस्यों को होने लगता है। जायसवाल जी लिखते हैं "पहली बार उसे एक सूनापन का अहसास होने लगा। बूढा घर छोड़कर चला जायेगा तो घर सचमुच सूना-सूना लगेगा। लड़कर, झगड़कर, बोल-बतियाकर, बूढा घर को बनाकर तो रखता था। उसके निकलते ही घर में सन्नटा घुस जाएगा। बूढा-पुराना घर की नींव होती है, घर की शोभा होता है, घर का गौरव होता है।"[8]

लेकिन जब किशुन साह घर से निकलते हैं तो रास्ते में जाते समय समाज, परिवार के मोह-माया, पुरानी स्मृतियाँ बार-बार आँखों के समाले आने लगती है। इसी करण वे आधे रास्ते से लौट जाते हैं। चंद्रकिशोर जायसवाल आँचलिक जीवन से जुड़े प्रसिद्ध कथाकार हैं। वे अपने लेखन में सरल लोक भाषा का प्रयोग करते हैं।

इस उपन्यास में कहावत और लोकोक्ति का भी प्रयोग किया है 'सीधे की मुहँ कुत्ता चाटे', 'बूढी घोड़ी लाल लगाम', 'काटो तो खून नहीं', 'फुंसी से भगंदर', 'जल में रहकर मगर से बैर', 'खेत खाये गदहा और मार खाये जुलाहा', 'जात भी गँवायी और भात भी न खाया', 'बगला भगत', 'तुम डाल- डाल मैं पात-पात', 'पैर तले की जमीन खिसक गयी', 'इट का जवाब पत्थर', 'कमजोर काठ कीड़ा खाये', 'खेत खाये गदहा और मार खाये जुलाहा', 'डूबते को तिनके का भी सहारा काफी हो जाता', 'काली गाय का अलग बथान' आदि।

निष्कर्ष - चंद्रकिशोर जायसवाल जी ग्रामीण-जीवन की अनेक समस्याओं को बहुत ही गहराई से चित्रण करते हैं। 'गवाह गैरहाजिर' में जो समस्या उठाई गयी है वह समस्या सिर्फ किशुन साह के ही परिवार की नहीं है यह समस्या उन सारे परिवार की है जिनके घर में किशुन साह जैसे व्यक्ति हैं। जायसवाल जी इन समस्याओं को अपने लेखन के माध्यम से पाठक का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं ताकि समाधान निकाला जा सके।

संदर्भ-सूची

1. चंद्र किशोर जायसवाल, गवाह गैरहाजिर, रचनाकार प्रकाशन, सहिबाबाद, 2008, पृष्ठ संख्या 9
2. चंद्र किशोर जायसवाल, गवाह गैरहाजिर, रचनाकार प्रकाशन, सहिबाबाद, 2008, पृष्ठ संख्या 9
3. चंद्र किशोर जायसवाल, गवाह गैरहाजिर, रचनाकार प्रकाशन, सहिबाबाद, 2008, पृष्ठ संख्या 9–10
4. चंद्र किशोर जायसवाल, गवाह गैरहाजिर, रचनाकार प्रकाशन, सहिबाबाद, 2008, पृष्ठ संख्या 7
5. चंद्र किशोर जायसवाल, गवाह गैरहाजिर, रचनाकार प्रकाशन, सहिबाबाद, 2008, पृष्ठ संख्या 8
6. चंद्र किशोर जायसवाल, गवाह गैरहाजिर, रचनाकार प्रकाशन, सहिबाबाद, 2008, पृष्ठ संख्या 51
7. चंद्र किशोर जायसवाल, गवाह गैरहाजिर, रचनाकार प्रकाशन, सहिबाबाद, 2008, पृष्ठ संख्या 126
8. चंद्र किशोर जायसवाल, गवाह गैरहाजिर, रचनाकार प्रकाशन, सहिबाबाद, 2008, पृष्ठ संख्या 160